Original Research Paper Education

शिवपुरी जिले का जनसंख्या प्रतिरूप : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. पूजा चौहान (अतिथि विद्वान भूगोल)

डॉ0 शैलेन्द्र सिंह तोमर (प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष), शा0 महाविद्यालय राघोगढ़, गुना (म.प्र.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध–पत्र में शिवपुरी जिले की जनसंख्या एवं समस्त जनांकिकीय विशेषताएँ जैसे– जनसंख्या वृद्धि दर, जनसंख्या घनत्व, महिला पुरुष जनसंख्या, लिंगानुपात, ग्रामीण नगरीय जनसंख्या, साक्षरता एवं जनसंख्या प्रतिरूपों का अध्ययन करके अध्ययन क्षेत्र में होने वाली समस्याओं का समाधान एवं सुझाव प्रस्तुत कर शोध–पत्र को प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। जनसंख्या प्रतिरूप को विभिन्न प्रभागों में विभक्त कर जनसंख्या वितरण को सुस्पष्ट तरीके से समझाने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS :

प्रस्तावना

मनुष्य सभी विज्ञानों का अध्ययन करता है परन्तु इसके साथ–साथ वह अनेक विज्ञानों का अध्ययन क्षेत्र भी है लगभग सभी सामाजिक विज्ञान मनुष्य तथा उसके कार्यो का अध्ययन करते हैं, परन्तु प्रत्येक विज्ञान उसे एक विषिष्ट दृष्टिकोण से अध्ययन कराता है। अर्थषास्त्र के विद्वान मनुश्य को उत्पादक, उपभोक्ता तथा वितरण ाकर्ता के रूप में देखते हैं। राजनीति विज्ञान के विद्वान उसे षासक तथा षासित की दृश्टि से देखते हैं। समाजषास्त्री मनुश्य को सामाजिक प्राणी समझते हैं। इस प्रकार अध्ययन के दृश्टिकोण में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। भूगोल के अन्तर्गत मानव का अध्ययन एवं उपादान के रूप में किया जाता है।

वर्तमान में वैज्ञानिक युग में मानव विभिन्न प्रकार के भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है। यह भौतिक वातावरण का विषिष्ट अंग है। सांस्कृतिक वातावरण उसकी अनुपम कृति है, सांस्कृति भू–दृष्य के विभिन्न अवयव नगर, नहर, खेत, खलिहान, जलयान, वायुयान मार्ग आदि चारों ओर उसके हस्तकौषल और बौद्विक प्रतिभा के जीते–जागते उदाहरण हैं।

भूतल पर जो भी जनसंख्या है तथा उसके द्वारा पृथ्वी के विभिन्न भागों में क्षेत्रीय विशमताएँ लक्षित होती है उनकी उत्पत्ति में मनुश्य का हाथ है विष्व के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या के वितरण, घनत्व एवं उनकी विषेशताओं को उत्पन्न करने में जनसंख्या मनुश्य भौगोलिक कारक है। मनुश्य भौगोलिक ज्ञान की धुरी है इसलिए जनसंख्या का अध्ययन मनुश्य रूप से करना चाहिए जिससे मनुश्य को विभिन्न भागों में घटित होने वाली घटनाओं का संपूर्ण ज्ञान हो सके।

प्राचीनकाल में जनसंख्या अथवा मानव संबंधी हमारा विज्ञान केवल जनसंख्या के इतिहास एकत्रीकरण तथा विकास विधियों तक ही सीमित था लेकिन वर्तमान समय में हमारा जन समुदाय संबंधी ज्ञान धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। वर्तमान में हमें जनसंख्या संबंधी अनेक सूचनाऐं जैसे आयु, संरचना, लिंगानुपात, जीवन की दषाएँ, व्यवसायिक संरचना आदि के आंकड़े उपलब्ध हो रहे हैं। यही कारण है कि जनसंख्या षास्त्र नामक एक पृथक षास्त्र का विकास हुआ है।

जनसंख्या का भूगोल के निकट संबंध में जनसंख्या वृद्धि की समस्या को उसके उचित वितरण द्वारा ही सुलझा सकते हैं अर्थात् ऐसे स्थान जहाँ कृशि एवं औद्योगिक संभावनाएँ है वहाँ जनसंख्या को स्थानांतरित भी किया जा सकता है किन्तु इस प्रयास से पूर्व उस स्थान–विषेश का भौगोलिक अध्ययन करना आवष्यक है।

अध्ययन क्षेत्र

षिवपुरी जिले के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य हैं। षिवपुरी जिला ग्वालियर संभाग का एक जिला है जो उत्तरीय विंध्याचल की अवषिश्ट पहाड़ियों की गोद में बसा है। षिवपुरी अजमेर– ग्वालियर भौगालिक विभाजन में आगरा–मुम्बई राश्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक–3 पर ग्वालियर से 118 कि.मी. दक्षिण एवं भोपाल से 350 कि.मी. उत्तर–पष्चिम में स्थित है। षिवपुरी अपनी हरियाली ओर घने जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। प्रागैतिहासिक काल में यह षहर 'सीपर' के नाम से जाना जाता था तथा नलपुर (वर्तमान नरवर) के राजा नल के अधीन था।

साहित्यिक रूप से भगवान षिव की तपस्थली के नाम से प्रचलित षिवपुरी समुद्र तल से 521.5 मीटर ऊँचाई से एवं 25°21′ से 25°32′ उत्तरी अक्षांष एवं 77°7′ से 77°32 पूर्वी देषान्तर के बीच स्थित है। षिवपुरी जिले का क्षेत्रफल 10278 वर्ग किमी. है। षिवपुरी जिले को 8 जिलों की सीमा स्पर्ष करती है। षिवपुरी के पूर्व दिषा में झाँसी (उत्तरप्रदेष), ललितपुर (उत्तरप्रदेष), पष्चिम में वारा (राजस्थान), ष्योपुर, उत्तर में ग्वालियर, दतिया तथा दक्षिण में गुना व अषोकनगर हैं। देष के दो प्रांत राजस्थान तथा उत्तरप्रदेष , मध्यप्रदेष के षिवपुरी जिले से जुड़े हैं।

षिवपुरी जिले के अन्तर्गत 7 तहसीलें एवं 8 विकासखण्ड सम्मिलित हैं। जिले के उत्तर पष्चिम में पोहरी, उत्तरी मध्य भाग में षिवपुरी, उत्तर में नरवर, मध्य पूर्वी भाग में करैरा एवं पिछोर, दक्षिणी भाग में वदरवास, कोलारस एवं खनियाधाना विकासखण्ड स्थित हैं। राश्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक–3 (आगरा–बॉम्बे) राश्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक–25 (कानपुर–षिवपुरी) जिले के मध्य से गुजरते हैं, जो कि एक–दूसरे को जिला मुख्यालय षिवपुरी में काटते हैं।

अध्ययन का उद्देष्य

मानवीय विकास के साथ–साथ मानव की जिज्ञासा निरंतर बढ़ती जा रही है। मानव प्राचीन काल से ही अध्ययन का प्रमुख केन्द्र रहा है, लेकिन बीसवी षताब्दी में जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप जनसंख्या ने आज जटिल स्वरूप धारण कर लिया है। देष की बढ़ती हुई जनसंख्या एक प्रमुख समस्या बन गई है जो कि देष की चतुर्मुखी विकास में बाधक सिद्ध हो रही है।

जनसंख्या का भूगोल से निकट संबंध में जनसंख्या वृद्धि की समस्या को उसके उचित वितरण द्वारा ही सुलझा सकते हैं अर्थात् ऐसे स्थान जहां कृशि एवं औद्योगिक संभावनाऐं हैं वहां जनसंख्या को स्थानांतरित भी किया जा सकता है। किन्तु इस प्रयास के पूर्व उस स्थान–विषेश का भौगोलिक अध्ययन करना आवष्यक है। भौगोलिक अध्ययन से ही उस स्थान विषेश पर उत्पन्न होने वाली प्रत्येक संभावना का बोध होता है।

हमारे देष में भूमि पर तीव्र गति से बढ़ते हुए जनभार ने अनेक क्षेत्रीय समस्यायें उत्पन्न कर दी है। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए भविश्य में यह समस्या और भी अधिक भीशण–रूप धारण कर सकती है क्योंकि भारत में जनसंख्या वृद्धि को समस्या के कारण आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा राजनैतिक नियोजन के सभी प्रयास असफल रहे हैं। योजनाओं का प्रमुख उद्देष्य यह है कि देष में उत्पादन बढ़े और लोगों का जीवन–स्तर ऊँचा उठे, जिससे स्वतः ही सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान हो सकेगा। लेकिन जनसंख्या की बढ़ती समस्या से इन योजनाओं के सभी प्रयास निश्क्रीय रहे हैं। अतः देष के समुचित विकास एवं स्वर्णिम भविश्य के लिये जनसंख्या नियंत्रण परम आवष्यक है।

जनसंख्या संबंधी समस्या का हल खोजने के लिये केन्द्रीय एवं राज्य सरकार निरंतर प्रयत्नषील है जिसकी अभिव्यक्ति हमें विभिन्न पंचवर्शीय योजनाओं से दृश्टिगोचर होती है विभिन्न योजनाओं को प्रारंभ करने से पूर्व यह निष्चित करना आवष्यक है कि कार्यालयों में निर्मित योजनाऐं विभिन्न क्षेत्रों में उस स्थान विषेश की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए अनुमोदित की गई है अथवा नहीं ? तभी उपरोक्त योजनाऐं विभिन्न क्षेत्रों में सफल हो सकती है। षोध–क्षेत्र (जिला षिवपुरी म.प्र.) में भी यहां के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण के निर्माण में जनसंख्या कारक की महत्वपूर्ण भूमिका है। षिवपुरी जिले में जनसंख्या वृद्धि की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है , जनसंख्या वृद्धि के साथ अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही है जिनमें प्रमुख है – बेरोजगारी, निर्धनता, अषिक्षा और सामाजिक जागरूकता एवं इसके फलस्वरूप आपराधिक प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

षिवपुरी जिले की जनसंख्या में व्याप्त वर्ग संघर्श की स्थिति नींचा जीवन स्तर, पिछड़ापन, बेरोजगारी एवं दस्यु समस्याओं ने षोधकर्ता के भौगोलिक मस्तिश्क को षिवपुरी जिले की जनसंख्या का क्रमबद्ध भौगोलिक अध्ययन करने पर विवष कर दिया है और इसी आषय से षोधकर्ता ने ''षिवपुरी जिले का मनसंख्या प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन'' नामक षीर्शक पर षोध पत्र करने का निष्चय किया है। जिससे षिवपुरी जिले की जनसंख्या में व्याप्त उपरोक्त समस्याओं की जड़ का पता लगाया जा सके और उसका निदान प्रस्तुत किया जा सके।

आंकड़ों का स्रोत एवं प्रविधि

षोध–पत्र में विवेचना, स्पश्टीकरण एवं निश्कर्श पुस्तकों, प्रतिवेदनों, आंकड़ों, मानचित्रों एवं स्वयं के निरीक्षण पर आधारित है। षिवपुरी जिले के जनसंख्या एवं इससे संबंधित आंकड़े जिला सांख्यकीय कार्यालय से प्राप्त करके विष्लेशण किया गया है। इसके साथ ही जिला सांख्यकीय पुस्तिका व जिला विकास पुस्तिका का वर्शवार अध्ययन किया गया है।

इस षोध पत्र में आधुनिक युग में सामाजिक विज्ञान में षोध हेतु प्रयोग लाई जा रही उन सभी षोध पद्धतियों का अध्ययन किया गया है जो वैज्ञानिक है। षोध पत्र के लिए अध्ययन सामग्री का संकलन तथा उसका विष्लेशण कर उपयोगी निश्कर्श निकालने का हर संभव प्रयास किए गए हैं जिसके फलस्वरूप निष्चित क्षेत्र में जनसंख्या का पूर्ण अध्ययन करना है। इसके अन्तर्गत प्रकरण उपागमन तथा व्यवहारिक विधि का भी प्रयोग किया गया है।

विष्लेशण सारांष

षिवपुरी जिले में जनसंख्या वृद्धि का इतिहास प्राचीन नहीं है। यहाँ की जनसंख्या कृशि एवं अन्य व्यवसायों से जुड़कर गत 3 दषाब्दियों में जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा दे रही है। षिवपुरी जिले में कृशि कार्य लघु उद्योग एवं संसाधनों की उपयोगिता के आधार पर जनसंख्या में तीव्र परिवर्तन देखने को मिलते हैं। षिवपुरी जिला सांस्कृतिक विरासत में अनमोल है एवं वन क्षेत्र की बहुलता से यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है। वनों एवं वन्य जीवों की विविधता एवं बहुलता को ध्यान में रखकर माधव राश्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गई। पर्यटन की दृश्टि से सम्पूर्ण जिला पर्यटन क्षेत्र घोशित किया गया है। उपरोक्त अनगिनत उपलब्धियों के बावजूद भी षिवपुरी जिले की जनसंख्या प्रतिरूप में काफी भिन्नता देखने को मिलती है। षिवपुरी जिले में जनसंख्या का वितरण प्रभागों में विभक्त करके किया गया है जो कि उस क्षेत्र विषेश की जनांकिकीय विषेशताओं को बताता है जिसमें षिवपुरी जिले की वर्श 2011 की जनगण ना के अनुसार कुल जनसंख्या 1726050 है। जिसमें पुरूश जनसंख्या 919795 तथा महिला जनसंख्या 806255 है। साक्षरता का प्रतिषत 63.7 है तथा लिंगानुपात 877 है। जनसंख्या वृद्धि का सर्वाधिक प्रभाव वर्श 1981 से 2011 तक देखने को मिला है। साथ ही दषाब्दिक जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन इस क्षेत्र विषेश में अनेक समस्याओं को जन्म दे रहा है। जनसंख्या वृद्धि दर वर्श 2001 में 20.84 प्रतिषत थी जो कि वर्श 2011 में 22.7 प्रतिषत हो गई है।

षिवपुरी जिले में ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण अधिकांष जनसंख्या कृशि पर निर्भर है। कृशि कार्य परम्परागत तरीकों से जीवन निर्वाह के लिये किया जाता है। कृशि के अलावा घरेलू पषुपालन भी किया जाता है। खनिज संसाधनों के रूप में यहाँ केवल पत्थरों की खदाने हैं जिसका विदेषों में निर्यात भी किया जाता था परन्तु वर्तमान में अधिकांष खदाने वन क्षेत्रों में होने से पर्यावरण संरक्षण को दृश्टिगत रखते हुये इन्हें षासन द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया है। कुछ लघु उद्योग ही विकसित हो पाये हैं जिनमें मुख्य रूप से तेंदू पत्ता तथा लाख उद्योग है। षिवपुरी जिले का आर्थिक एवं सामाजिक विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। यहाँ कि अधिकांष जन समुदाय बेरोजगार है तथा बेरोजगारी के कारण अपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है। इसी कारण इस जिले में दस्यु समस्या भी एक अभिषाप बन गई है।

षिवपुरी जिले की जनसंख्या में व्याप्त वर्ग संघर्श की स्थिति निम्न जीवन स्तर, पिछड़ापन एवं दस्यु समस्या आदि का मुख्य कारण साक्षरता का अभाव है। जिले की औसत साक्षरता 63.7 प्रतिषत है। जबकि मध्यप्रदेष की साक्षरता 69.32 है। जिले में षिक्षण संस्थाओं की संख्या संतोशजनक होते हुये भी सर्वसाधारण में षिक्षा के प्रति आकर्शण की कमी के कारण षिक्षा साक्षरता का प्रतिषत कम है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर षिवपुरी जिले का जनसंख्या प्रतिरूप एक भौगोलिक विष्लेशण नामक षीर्शक पर अपना षोध पत्र प्रस्तुत किया है। जिसके अन्तर्गत जनसंख्या प्रतिरूपों को ध्यान में रखकर इस क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

निश्कर्श एवं सुझाव

षिवपुरी जिले का जनसंख्या प्रतिरूप एक भौगालिक विशय पर अध्ययन करने के उपरांत हम इस निश्कर्श पर पहुँचते हैं कि जिले में भौतिक संसाधनों –मिट्टी, जलवायु, नदियों आदि के रूप में विपुल प्राकृतिक सम्पदा उपलब्ध है जो जिले के लिये ईष्वरीय वरदान है। यदि इनका ठीक तरह से पूर्ण उपयोग किया जाये तो निःसंदेह जिले की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की अपार संभावनायें विद्यमान है। जिले की जनसंख्या वृद्धि की विषेश समस्या प्रभावी है। जनसख्या की समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त प्रमुख सुझाव निश्कर्श के रूप में देने का प्रयत्न किया गया है।

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर रोक करने के लिये जन जागरूकता एवं साक्षरता को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना चाहिए।

षिक्षा का प्रचार–प्रसार करना जिससे षिक्षित व्यक्तियों को रोजगार मिल सके और उन्हें रोजगारोन्मुखी बनाया जा सके।

कृशि उत्पादन में वृद्धि के प्रयास किये जाने चाहिए तथा आधुनिक कृशि को बढ़ावा देने के लिये नई तकनीकों के बारे में जागरूक बनाकर कृशकों को कृशि की गुणवत्ता, परिवहन के साधनों एवं बाजार मूल्य की स्थिति से अवगत कराना चाहिए।

औद्योगिकरण को प्रोत्साहन देकर छोटे–बड़े लघु–कुटीर उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किये जाने चाहिए जिससे जिले की जनसंख्या को रोजगार के अवसर सुलभ हो सके।

प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग कर संसाधनों के संरक्षण की महत्ता को बताने का प्रयास किया जाना चाहिए।

षिवपुरी जिले की जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करके जिले को विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। प्रस्तुत षोध–पत्र में जनांकिकीय विषेशताओं के साथ इस क्षेत्र विषेश में होने वाली समस्याओं के उचित सुझाव प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया गया है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1.	अग्रवाल एस.के.	–	प्रिंसिपल ऑफ डेमोग्राफी
2.	अग्रवाल एम.एन.	–	इन्डियाज पापूलेषन प्राब्लम्स द्वितीय संस्करण 1977
3.	बोस आषीष	–	पेटनर्स ऑफ पापूलेषन प्राब्लम किताब महल, इलाहबाद, 1961
4.	भट्टाचारजी पी.टी.	–	पापूलेषन सन इंडिया 1976
5.	चन्दन आर.सी. एण्ड सिद्धू	–	इन्ट्रोडक्षन टू पापूलेषन ज्योग्राफी 1972
6.	क्लार्क जे.आई.	–	पापूलेषन ज्योग्राफी डबलपमेंट कंट्रीज 1971
7.	चन्द्रषेखर एस.	–	इण्डियाज पापूलेषन एलाइड पब्लिषर्स बाम्बे 1967
8.	डेस्को जी.जे.	–	पापूलेषन ज्योग्राफी
9.	हीरालाल	–	जनसंख्या भूगोल वसुंधरा प्रकाषन गोरखपुर, 1995
10.	कुमार प्रमिला	–	म0प्र0 एक भौगोलिक अध्ययन (म0प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल)
11.	मामोरिया सी.बी.	–	इण्डियाज पापूलेषन प्रोब्लम (किताब महल) इलाहबाद, 1961
12.	मेहता मा.म.	–	मध्यप्रदेष दर्षन आर्थिक सांख्यकीय संचालनाय, 1957
13.	माल्थस	–	एन.ऐसे ऑफ दी प्रिन्सीपल ऑफ पापूलेषन
14.	ओझा रघुनाथ	–	जनसंख्या भूगोल (प्रतिभा प्रकाषन) आचार्य नगर कानपुर
15.	पण्डा वी.पी.	–	जनसंख्या भूगोल हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1988
16	रायजादा अजीत	–	ट्राईवल डबलपमेंट इन मध्यप्रदेष, इन्ट. रइंडिया पब्लिकेषन नई दिल्ली 1984
17.	षुक्ला एच.एल.	–	ट्राइवल हैरीटेज ऑफ मध्यप्रदेष (बी. आर. पब्लिषिंग कारर्पोरेषन) दिल्ली , 1986
18.	तिवारी षिवकुमार	–	मध्यप्रदेष की जनजातियां (समाज एवं व्यवस्था) मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
19.	ट्रिवार्था जी.टी.	–	ए. ज्योग्राफी ऑफ पापुलेषन बर्ल्ड पेटनर्स (जॉन विले एण्ड सन्स) न्यूयार्क 1972
20.	विद्यालंकर सत्यदेव	–	मध्यभारत जनपदीय अभिनन्दन ग्रंथ
21.	माल्थस	–	एन. ऐसे ऑफ दि प्रिन्सीपल ऑफ पापुलेषन।

षासकीय प्रकाषन एवं प्रतिवेदन :–

1. जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2011 जिला सांख्यिकीय कार्यालय जिला षिवपुरी।
2. भारत की जनगणना 1991 मध्यप्रदेष जगणना कार्य निदेषालय मध्यप्रदेष भोपाल।
3. भारत की जनगणना 2011 मध्यप्रदेष के अन्तिम आंकड़े जनगणना कार्य निदेषालय मध्यप्रदेष भोपाल।
4. विकासखण्ड विकास पुस्तिका।

अप्रकाषित षोध ग्रंथ :–

1. डॉ0 चौहान, पूजा (मार्गदर्षक –डॉ0 तोमर एस.एस.) – ''षिवपुरी जिले का जनसंख्या प्रतिरूप : एक भौगोलिक विष्लेशण'' , 2007